

# दि कामिक पोर्ट

वर्ष : 8, अंक : 10

(प्रति बुधवार), इन्दौर, 26 अक्टूबर 2022 से 1 नवंबर 2022

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

## देश की राजधानी में वायु प्रदूषण से बिगड़े हालात, पर्यावरण मंत्री ने की वर्क फॉम होम की अपील

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर की आबोहवा बद से बदतर होती जा रही है। दिल्ली और इससे सटे हुए इलाकों में AQI का लेवल खतरनाक स्थिति में पहुंच गया है। SAFAR India air quality service के मुताबिक, बुधवार को राजधानी का औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक यानी एयर क्लाइटी इंडेक्स (AQI) 373 दर्ज किया गया। इसके अलावा 1 नवंबर को फरीदाबाद में 403, मानेसर में 393, गुरुग्राम 390, बहादुर गढ़ में 400, सोनीपत 350, कैथल में 350, ग्रेटर नोएडा में 402, नोएडा में 398, गाजियाबाद में 381 AQI था। इस दूषित हवा में काम तो दूर सांस लेना तक दूभर हो गया है। इस दौरान दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने लोगों से वर्क फॉम होम करने की अपील की है। उन्होंने सलाह दी है कि जो भी लोग ऑफिस जा रहे हैं वह कार या बाइक शेयर करें। इससे कम गाड़ियां सड़क पर निकलेंगी।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में पिछले 2 दिनों से प्रदूषण का स्तर अलग इलाकों में बढ़ा हुआ है। दिल्ली ही नहीं बल्कि उत्तरप्रदेश, हरियाणा के कई इलाकों में तक्का का लेवल बढ़ा हुआ था। इस बीच राज्य के पर्यावरण मंत्री ने केंद्र सरकार पर भी निशाना साधा। उन्होंने बताया कि कल दिल्ली में एंटी डस्ट अभियान के तहत निरक्षण किया गया था। इस दौरान पाया गया कि एल एंड टी की साइट पर चोरी लुप्त काम चल रहा था। मिट्टी खुले में पड़ी थी, एंटी स्मॉग गन नहीं लगी थी। बाद में पता चला कि वहां बीजेपी का कार्यालय बना रहा है। गोपाल राय ने कहा कि BJP ने CAQM का ऑर्डर नहीं माना।

लोग भी दे पहल में साथ ... गोपाल राय ने दिल्ली की आबोहवा को दुरुस्त करने के लिए लोगों से भी साथ देने की अपील की है। उन्होंने कहा, लोगों से



अपील है कि कहीं भी निर्माण कार्य होता देखें तो फोटो खींचकर ग्रीन एप पर भेजें। बीजेपी पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि कल बीजेपी दफ्तर में निर्माण कार्य चल रहा था, हो सकता है BJP वाले कहीं और भी ऐसा निर्माण कार्य चलवा रहे हैं। उन्होंने अपील की कि कोयला या लकड़ी का उपयोग न करें। बायोमास बनिंग से प्रदूषण फैलता है। सोसायटी और RWA सुरक्षा गार्ड को इलेक्ट्रिक हीटर दें ताकि वे ठंड से बचने के लिए खुले में आग न जलाएं।

## बिना पराली जलाए गेहूं की बिजाई करने में वर्षों से जुटे 2 भाई, पर्यावरण संरक्षण में डाला योगदान

संगरुर नजदीकी गांव समूरां के दो भाई रण सिंह व रणधीर सिंह वर्षों से पराली को बगैर आग लगाए गेहूं की बुआई करके पर्यावरण संरक्षण में अहम योगदान डाल रहे हैं। उन्होंने बताया कि उनके पास कुल आठ एकड़ जमीन है। वह धान की कटाई के बाद पराली को नहीं जलाते बल्कि अवशेषों को रोटावेटर की मदद से मिट्टी में मिला देते हैं, इसे बाद उसमें पानी छोड़ा जाता है जिससे अवशेष गलकर खाद बन जाते हैं। उनके पास ट्रैक्टर नहीं है। वह किराये पर लेकर खेती करते हैं।

**पराली खेत में दबाने से बनती है खाद**

किसानों ने बताया कि इस तरीके से गेहूं की फसल की पैदावार में उसे किसी प्रकार का घाटा नहीं पड़ता। पराली में गेहूं बोने से आगे चलकर गेहूं हवा और पानी से नीचे नहीं गिरती। इससे फसल की पैदावार बढ़ेगी। किसान भाइयों ने बताया कि पराली खेत में दबाने से उसकी खाद



यूरिया खाद व डीएपी का कम उपयोग करना पड़ता है जिससे उनकी बचत होती है। इसके अलावा पेड़ पौधों को आग से नुकसान नहीं होता। पहले आग लगाने से खेत के आसपास लगाए फलदार पौधे जलकर नष्ट हो जाया करते थे।

### खाद में तबदील करें पराली

दोनों भाइयों ने किसानों से अपील की कि वह पराली को जमीन में मिलाकर खाद का खर्चा घटाएं व अधिक मुनाफा कमाकर जमीन की उपज शक्ति बढ़ाएं। इससे उनको दोगुना लाभ मिलेगा। किसान रणधीर सिंह ने कहा कि उनकी पैदावार कभी भी कम नहीं हई। पराली मिलाने से जमीन की सतह नरम पड़ जाती है। जिससे जड़ों को अधिक तत्व मिलते हैं। पिछले वर्ष अधिक तापमान बढ़ने से किसानों को आर्थिक बन जाती है जो गेहूं की फसल के लिए बेहद उपयोगी है। उनको दूसरे किसानों के मुकाबले

मिलते हैं। पिछले वर्ष अधिक तापमान बढ़ने से किसानों को आर्थिक घाटा पड़ गया था परन्तु उनको कम नुकसान हुआ है।



## यातायात से होने वाले वायु प्रदूषण से बढ़ सकता है डिमेशिया का खतरा

नई दिल्ली। एक तरह के यातायात से होने वाले वायु प्रदूषण से खतरनाक कण निकलते हैं जिन्हें पार्टिकुलेट मैटर कहा जाता है। यह मनोभ्रंश या डिमेशिया के बढ़ते खतरे से जुड़ा हो सकता है। शोधकर्ताओं ने विशेष रूप से सूक्ष्म कण पीएम 2.5 को देखा, जो हवा में बिखरे 2.5 माइक्रोन से कम व्यास के प्रदूषक कण होते हैं। मेटा विश्लेषण में वायु प्रदूषण और मनोभ्रंश के खतरे पर सभी उपलब्ध अध्ययन शामिल किए गए थे।

अध्ययनकर्ता एहसान अबोलहासानी ने कहा जैसे-जैसे उम्र बढ़ती है, लोगों में मनोभ्रंश जैसी स्थितियां अधिक सामान्य होती जा रही हैं, इसलिए रोकथाम योग्य खतरे वाले कारणों का पता लगाना और समझना इस बीमारी के बढ़ने को कम करने के लिए महत्वपूर्ण है। एहसान अबोलहासानी, लंदन के वेस्टर्न यूनिवर्सिटी में शोधकर्ता हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के मुताबिक दुनिया की 90 फीसदी से अधिक आबादी वायु प्रदूषण के निर्धारित स्तर से अधिक प्रदूषण वाले क्षेत्रों में रह रही है। मेटा-विश्लेषण के लिए, शोधकर्ताओं ने 17 अध्ययनों की समीक्षा की। जिसमें प्रतिभागियों की उम्र 40 से अधिक थी। सभी अध्ययनों में 9.1 करोड़ से अधिक लोग थे। उनमें से, 55 लाख या 6 फीसदी लोगों को मनोभ्रंश की बीमारी हुई। अध्ययन में कई कारणों को शामिल किया गया है जो उम्र, लिंग, धूमपान और शिक्षा सहित किसी व्यक्ति के मनोभ्रंश के खतरे को प्रभावित करते हैं। शोधकर्ताओं ने मनोभ्रंश के साथ और बिना दोनों लोगों के लिए वायु प्रदूषण जोखिम की दरों की तुलना की और पाया कि जिन लोगों में मनोभ्रंश की बीमारी नहीं हुई थी, उनमें मनोभ्रंश वाले लोगों की तुलना में सूक्ष्म कण वायु प्रदूषकों का रोज होने वाले औसत खतरे से कम था। अमेरिका की पर्यावरण प्रदूषण एजेंसी (ईपीए) 12 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर तक के औसत वार्षिक जोखिम को सुरक्षित मानती है। शोधकर्ताओं ने पाया कि सूक्ष्म कण पदार्थ के संपर्क में हर एक माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर वृद्धि से मनोभ्रंश का जोखिम 3 फीसदी बढ़ जाता है। अबोलहासानी ने कहा कि जबकि हमारा मेटा-विश्लेषण यह साबित नहीं करता है कि वायु प्रदूषण से मनोभ्रंश होता है, यह केवल एक जुड़ाव दिखाता है, हमारी आशा है कि ये निष्कर्ष लोगों को प्रदूषण के जोखिम को कम करने में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाएंगे। वायु प्रदूषण के संपर्क में आने से मनोभ्रंश के खतरे को समझकर, लोग खतरे को कम करने के लिए कदम उठा सकते हैं, जैसे कि स्थायी ऊर्जा का उपयोग करना, प्रदूषण के निम्न स्तर वाले क्षेत्रों में रहना और आवासीय क्षेत्रों में कम प्रदूषण वाले यातायात की हिमायत करना। अबोलहासानी ने कहा कि मेटा-विश्लेषण की एक सीमा इस विशिष्ट विषय पर उपलब्ध अध्ययनों की कम संख्या थी और इसमें और अध्ययन की जरूरत है। यह अध्ययन अमेरिकन एकेडमी ऑफ न्यूरोलॉजी के मेडिकल जर्नल में प्रकाशित हुआ है।

## पर्यावरण संतुलन के साथ ज्यादा मुनाफा के लिए लगाये महोगनी के पेड़

मोतिहारी जिले में जिस प्रकार से परंपरागत रूप से उगने वाले शीशम के पेड़ में फैली महोगनी ने इस प्रजाति को नष्ट कर रही है वैसे में किसान भाई महोगनी के पेड़ लगाकर जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण संकट से न केवल उबर सकते हैं बल्कि इस पौधे से अच्छी आमदनी भी कर सकते हैं।

पूर्वी चंपारण जिले की मिट्टी और जलवायु महोगनी की खेती के लिए अनुकूल है। यह बाते हाल में ही मोतिहारी वन प्रमंडल झारा किये गये शोध से भी स्पष्ट हुआ है। वन विभाग के अधिकारियों को माने तो महोगनी के खेतों में किसान बस थोड़ी धैर्य रखे तो बंपर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि 200 फीट तक की ऊँचाई तक बढ़ने वाले इस पेड़ का न केवल लकड़ी बल्कि इसके बीज, छाल और पत्तियां तक की बाजार में अच्छी कीमत मिलती है। जिला वन प्रमंडल पदाधिकारी धैर्यता की माने तो महोगनी की लकड़ियां खराब नहीं होती, साथ ही महोगनी का पेड़ महज 12 साल में पूर्ण रूप से विकसित होता जाता है। इसकी लकड़ियों का उपयोग जहाज बनाने के से लेकर गहने, फर्नीचर, प्लाईवुड, सजावट और मर्तियां बनाने में भी होता है। साथ ही महोगनी की छाल और पत्तियों में औषधीय गुण मौजूद होने के कारण दवा बनाने में भी प्रयोग किया जाता है। महोगनी की लकड़ी लाल और भूरे रंग की होती है, और यह वाटरफुफ भी होता है। महोगनी के पेड़ के विकास के लिए उपजाऊ व अच्छी जल निकासी वाले मिट्टी के साथ सामान्य पीएच उपयुक्त माना गया है। वर्षीय परसौनी कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों की माने तो महोगनी के समीप मच्छर और कीड़े नहीं आते हैं। इसी कारण इसकी पत्तियों और बीजों के तेल का इस्तेमाल मच्छर भगाने वाले उत्पाद और कीटनाशक बनाने में किया जाता है। साथ ही इसके तेल का इस्तेमाल साबुन, पेट, वार्निश बनाने में भी होता है।

## भारत और चीन में समय से पहले भारी संख्या में लोगों को मौत के मुंह में धकेल सकता है वायु प्रदूषण

नई दिल्ली। पेन स्टेट की टीम ने वायु गुणवत्ता और भविष्य में समय से पहले होने वाली मौतों को प्रभावित करने वाले कारणों का पता लगाया। शोध के अनुसार, अधिक उम्र वाली जनसंख्या और आर्थिक विकास में नाकामायाबी, कम वायु प्रदूषण और धीमी जलवायु परिवर्तन से स्वास्थ्य को होने वाले फायदों से पीछे धकेल सकते हैं।

टीम ने अतीत और अनुमानित आंकड़ों का उपयोग करके भविष्य के पांच परिदृश्यों को मॉडल किया, जिसमें वायु प्रदूषण के कारण समय से पहले होने वाली मौतों का अनुमान लगाया गया और दुनिया के उन क्षेत्रों की पहचान की गई जो सबसे अधिक प्रभावित हो सकते हैं।

प्रमुख अध्ययनकर्ता वेर्ड ऐंग ने कहा, जब हम भविष्य की आबादी पर प्रदूषण के प्रभावों के बारे में सोचते हैं, तो परिवेशी कण पदार्थ-या वायु प्रदूषण, जीवाश्म ईंधन उत्सर्जन के कारण दुनिया भर में स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ा खतरा है। ऐंग, पेन स्टेट कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग और अंतर्राष्ट्रीय मामलों के पेन स्टेट स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेर्स में सिविल और पर्यावरण इंजीनियरिंग के सहायक प्रोफेसर हैं। स्वास्थ्य पर पड़ने वाले बोझ अलग-अलग देशों में असमान रूप से वितरित हैं और यह ग्लोबल साउथ द्वारा असमान रूप से वहन किया जाता है। भविष्य में दुनिया भर के स्वास्थ्य के विश्वसनीय अनुमानों को बनाने के लिए, हमने एक एकीकृत मॉडलिंग ढांचा बनाया



भविष्य के परिदृश्यों में पाया कि चीन और भारत में सबसे अधिक संख्या में अकाल मृत्यु होने के आसार हैं। ऐंग ने कहा कि यह संभवतः नियंत्रण की कमी के कारण खतरे की उच्च दर का परिणाम है, जो एक बढ़ती उम्र वाली आबादी के साथ जुड़ा हुआ है जो प्रदूषण को लेकर अधिक खतरे में है। ऐंग ने कहा, असंतोषजनक सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों और स्वास्थ्य देखभाल तक सीमित पहुंच वाले क्षेत्रों में उच्च आधारभूत मृत्यु दर होती है। यदि आप कहते हैं कि उम्र बढ़ने की आबादी के साथ, मृत्यु दर बढ़ जाती है। यदि हम हवा को साफ करने और उत्सर्जन पर रोक लगाते हैं, तो हमारे पास स्वास्थ्य पर पड़ने वाले बुरे प्रभावों के खिलाफ लड़ने के लिए एक अलग मौका है। कोलंबिया विश्वविद्यालय में लैमोंट सहायक अनुसंधान प्रोफेसर, सह-अध्ययनकर्ता डैन वेस्टरवेल्ट ने कहा कि उनका मॉडलिंग ढांचा वायु प्रदूषण के प्रभावों को कम नहीं करती है। ऐंग के अनुसार, बुढ़ापा और घटी आधारभूत मृत्यु दर - वायु प्रदूषण से संबंधित प्राकृतिक मृत्यु दर, केवल वायु प्रदूषण के संपर्क में आने की तुलना में समय से पहले होने वाली मौतों की बेहतर पूर्वानुमान थे। सिविल और पर्यावरण इंजीनियरिंग में पेन स्टेट डॉक्टरेट छात्र हुई यांग ने कहा, चीन और भारत जैसे उभरते बाजार वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में आधे से भी कम योगदान देते हैं, लेकिन वे वायु प्रदूषण के कारण दुनिया भर में स्वास्थ्य के परिवर्तन तक संबंधित प्राकृतिक मृत्यु दर, केवल वायु प्रदूषण के संपर्क में आने की तुलना में समय से पहले होने वाली मौतों के बेहतर पूर्वानुमान थे। सिविल और पर्यावरण इंजीनियरिंग में पेन स्टेट डॉक्टरेट छात्र हुई यांग ने कहा, चीन और भारत जैसे उभरते बाजार वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में आधे से भी कम योगदान देते हैं, लेकिन वे वायु प्रदूषण के कारण दुनिया भर में स्वास्थ्य के 60 प्रतिशत तक नुकसान से पीड़ित हैं। यह आंशिक रूप से है क्योंकि उनके पास पर्यावरण या प्रभावी नियम नहीं हैं जो यह नियंत्रित कर सकें कि उद्योग कितना उत्सर्जन हवा में जारी कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि भविष्य के वायु प्रदूषण के संभावित रास्ते और पृथ्वी प्रणाली मॉडल का उपयोग करके संबंधित स्वास्थ्य बोझ को समझना प्रभावी तरीके से निपटने की रणनीतियों को तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण है। यह कार्य वायु प्रदूषण से भविष्य के स्वास्थ्य बोझ को निर्धारित करने में उत्सर्जन, जलवायु परिवर्तन, जोखिम स्तर और सामाजिक-जनसांख्यिकीय कारकों के प्रभावों को सुलझाने पर नई रोशनी डालता है। यह अध्ययन नेचर स्टेनेबिलिटी पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। प्रदूषण

शोधकर्ताओं ने अधिकांश

# जलवायु परिवर्तन के चलते पहले से कहीं ज्यादा होंगे इंद्रधनुषों के दीदार



न्यूयार्क। शायद ही कोई ऐसा प्रकृति प्रेमी होगा जिसे इंद्रधनुष की सतरंगी आभा अच्छी न लगती हो। आसमान में जब इंद्रधनुष नजर आता है तो सबकी नजरें उसी पर टिक जाती हैं। आपमें से बहुत से लोगों ने इसे देखा भी होगा, लेकिन क्या आप जानते हैं कि जलवायु में आते बदलावों के चलते धरती पर पहले से कहीं ज्यादा इंद्रधनुष नजर आएंगे।

इस बारे में हवाई विश्वविद्यालय से जुड़े वैज्ञानिकों के नेतृत्व में किए नए अध्ययन से पता चला है कि जलवायु में आते बदलावों के चलते धरती पर इंद्रधनुष देखने के अवसर कहीं ज्यादा बढ़ जाएंगे। जर्नल ग्लोबल एनवायरनमेंटल चेंज में प्रकाशित इस अध्ययन के मुताबिक सदी के अंत तक इंद्रधनुष वाले दिनों की संख्या में औसतन 5 फीसदी की वृद्धि होने की सम्भावना है। उत्तरी अक्षांशों और बहुत अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में जहां बढ़ते तापमान के कारण बर्फ में कमी के साथ बारिश में वृद्धि होने की सम्भावना है वहां इंद्रधनुषों के दिखाई देनी की घटनाओं में सबसे ज्यादा वृद्धि होगी। कहीं इसके विपरीत जिन क्षेत्रों में जलवायु परिवर्तन के चलते बारिश में कमी आएंगी जैसे

भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में वहां इनके दिखने की सम्भावना वाले दिनों की संख्या घट जाएगी। अनुमान है कि करीब 21 से 34 फीसदी क्षेत्रों में इंद्रधनुष दिखने की सम्भावना वाले दिनों में कमी आएंगी, जबकि 66 से 79 फीसदी क्षेत्रों में इनकी संख्या में वृद्धि होगी। शोधकर्ताओं के अनुसार हवाई द्वीप पर सबसे ज्यादा इंद्रधनुष दिखाई देती हैं यही वजह है कि उसे दुनिया में इंद्रधनुषों की राजधानी भी कहा जाता है।

अनुमान है कि जलवायु में आते बदलावों के साथ वहां हर साल

कुछ ज्यादा दिनों तक इंद्रधनुषों को देखें का मौका मिलेगा। अब आपके मन में सवाल होगा कि ऐसा क्यों होगा तो इसके पीछे की वजह जानने से पहले यह समझना जरूरी है कि यह इंद्रधनुष कैसे बनते हैं। जब पानी की बूंदें क्रिस्टल की तरह सूर्य के प्रकाश को परावर्तित और अपवर्तित करती हैं। तो सात रंगों की एक अनूठी आभा बनती है, जिसे इंद्रधनुष कहते हैं।

क्या है इंद्रधनुषों और जलवायु परिवर्तन के बीच

संबंध- आमतौर पर इंद्रधनुष में सात रंग दिखाई देते हैं जो तरंगदैर्घ्य यानी वेवलेंथ के अनुसार व्यवस्थित क्रम में होते हैं। देखा जाए तो हमें इंद्रधनुष कैसा दिखाई देगा यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि पृथ्वी पर हमारी स्थिति क्या है, मतलब कि हम कहां खड़े हैं और प्रकाश किस तरह से पड़ रहा है। ऐसे में देखा जाए तो सूर्य का प्रकाश और बारिश की बूंदें इंद्रधनुष के लिए आवश्यक तत्व हैं। लेकिन धरती पर जीवाश्म ईंधन और अन्य स्रोतों के कारण बढ़ते उत्सर्जन के चलते वातावरण तेजी से गर्म हो रहा है, जिससे बारिश की मात्रा और पैटर्न के साथ बादलों पर भी असर पड़ रहा है। जो इंद्रधनुषों के बनने को भी प्रभावित कर रहा है। अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने इंद्रधनुषों की भविष्यवाणी करने वाले मॉडल का उपयोग किया है। इसके लिए उन्होंने इंद्रधनुषों दिखाई देने वाले स्थानों, बारिश के मानचित्र, बादलों की उपस्थिति और सूर्य से कोण सम्बन्धी जानकारियों की मदद ली है। इन जानकारियों और

मॉडल की मदद से शोधकर्ताओं ने वर्तमान और भविष्य में इंद्रधनुषों के बनने की घटनाओं की संभावनाओं की गणना की है।

मॉडल से जो जानकारी सामने आई है उसके अनुसार द्वीप, इंद्रधनुषों के हॉटस्पॉट हैं। इस बारे में

अध्ययन से जुड़े एटमोस्फिरिक साइंस के प्रोफेसर स्टीवन बसिंगर का कहना है कि, द्वीप इंद्रधनुषों को देखने की सबसे अच्छी जगह हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि द्वीपीय क्षेत्र समुद्री पवनों की मदद से रोजाना हवा को ऊपर उठाता है, जिससे साफ आसमान में स्थानीय बौछारों और सूर्य के प्रकाश के कारण इंद्रधनुष बनते हैं। देखा जाए तो दुनिया भर में इंद्रधनुष, मानव संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं, जोकि अपनी सुंदरता के कारण मनभावन होते हैं। हालांकि इंद्रधनुषों के बनने की घटना में होने वाले यह परिवर्तन मानव कल्याण को कैसे प्रभावित कर सकते हैं इस बारे में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। लेकिन इतना स्पष्ट है कि दुनिया भर में जलवायु में आता बदलाव मानव अनुभवों के सभी पहलुओं को प्रभावित कर रहा है जिसमें इंद्रधनुष भी एक है।

## मुरत्यमंत्री श्री चौहान ने लगाए आँवला, शहतूत और पिथोरिया के पौधे



भोपाल मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने श्यामला हिल्स स्थित स्मार्ट सिटी उद्यान में आँवला, शहतूत और पिथोरिया के पौधे लगाए। अध्यक्ष सीहोर जिला पंचायत श्री गोपाल सिंह इंजीनियर और पत्रकार श्री आकर्ष शर्मा ने अपने जन्म-दिवस पर पौध-रोपण किया। सीहोर के सर्वश्री धर्मेन्द्र परिहार, सुरेन्द्र सिंह, शंकर पटेल, सुरेश, अनिल वर्मा, अतुल शर्मा, हरेन्द्र सिंह ठाकुर और दीनदयाल भी पौध-रोपण में शामिल हुए। मुख्यमंत्री श्री चौहान के साथ नवअरूपोदय सामाजिक एवं सांस्कृतिक समिति के श्री अनुपम शर्मा, श्रीमती कोकिला चतुर्वेदी, कुमारी शाम्भवी शर्मा, श्रीमती पारूल शर्मा और श्री आशुतोष भार्गव ने भी पौध-रोपण किया। समिति गत 10 वर्षों से ग्राम विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य कर रही है। समिति द्वारा जल-संरक्षण को लेकर यात्राएँ निकाली गई हैं। साथ ही जन-भागीदारी से साफ-सफाई और वृक्ष-रोपण गतिविधियाँ संचालित करती हैं।

## राष्ट्रीय पंचतत्व महोत्सव के अंतर्गत जेकेके में नाट्य बैले परफॉर्मेंस, नाटक में पर्यावरण प्रदूषण से पैदा हो रहे संकटों को किया जाहिर कर दिया पर्यावरण संदेश



जयपुर जवाहर कला केंद्र में आयोजित राष्ट्रीय पंचतत्व महोत्सव के पहले दिन नाट्य बैले की प्रस्तुति दी गयी। कार्यक्रम का आयोजन संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, जवाहर कला केंद्र एवं ओरियन ग्रीन्स जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। भोपाल से आए 14 कलाकारों ने पर्यावरण प्रदूषण से पशु-पक्षियों के सामने पैदा हुए संकट को संगायन सभागार के मंच पर जाहिर किया।

प्रस्तुत बैले जीवन धारा भिन्न वर्णीय चिडियों के माध्यम से पर्यावरणीय संकट की समस्याओं से दो-चार होता है। बहुत रोचक, विश्वसनीय ढंग से शहरी, ग्रामीण और वन्य जीवन में पर्यावरण प्रदूषण के अंतर को रेखांकित करता है। चिडिया भी गांव से शहर की ओर आती हैं, क्योंकि यहां सहजता से बिखरे दाने उन्हें मिल जाते हैं, वहीं गांव में पेस्टिसाइड के छिड़काव से तैयार अनाज की फलियों के सहारे जीवन काटना

मुश्किल हो रहा है। उन्हें शहर आकर अहसास होता है कि यहां का प्रदूषित माहौल तो इंसानों के लिए भी अनुकूल नहीं है। वे %चलो चलो रे उड़ चलो रे% कहते हुये अपने प्राकृतिक बातावरण की ओर लौट आते हैं 7 वे सभ्य समाज के सामने प्रश्न छोड़ते हैं कि क्या यही तुम्हारी जीवन धारा है?

डॉ. अंजना पुरी की कहानी में दर्शाया गया कि मनुष्य जीवन का अस्तित्व प्राकृतिक संपदा, जैव विविधता, वन्य जीवों और पारिस्थितिकीय संतुलन के बिना संभव नहीं है। भूमण्डलीय तापमान वृद्धि से पृथ्वी हल्कान है। हमारी जीवन शैली बदल गई है। दुर्भाग्य से मनुष्य सबसे बड़ा पर्यावरण प्रदूषक बन गया है। सुविधा भोगी और उपभोगतावादी समाज की अंधविकासीय अभीप्साओं ने वंचित वर्ग और वन्य प्राणियों-परिंदों के जीवन पर संकट खड़ा कर दिया है।

**छाऊ व इंडियन बैले का संमिश्रण-** विषय जटिल समस्याओं पर आधारित होकर भी नृत्य नाटिकों में चित्तार्क्षक संगीत, नयनाभिराम वेष भूषा, परिंदों की रोचक नृत्य गतियों, ग्राम-शहरों के जीवन्त दृश्य बंधों के द्वारा मनोरंजक बना। यह दर्शकों को सचेत भी करता है। पद्मश्री शशाधर आचार्य के निर्देशन में तैयार प्रस्तुति में छाऊ तथा इंडियन बैले का संमिश्रण देखने को मिला। जीवन धारा प्रस्तुति से पहले नाथद्वारा से डॉक्टर दीपा मिश्रा ने शिव स्तुति की। कार्यक्रम में रोली अग्रवाल प्रिंसिपल कमिशनर इनकम टैक्स विभाग, भारत सरकार, पंकज ओझा रजिस्ट्रार राजस्थान सिविल सेवा अपीलीय अधिकरण, जयपुर कथक केंद्र आचार्य रेखा ठकर, पं. सुरेश मिश्रा जननेता एवं जयपुर मैराथन सीईओ, कला मर्मज्ञ आशा गोलछा, अनुपमा सोनी व अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

## बढ़ते तापमान के साथ गरीब देशों की कमर तोड़ रहा है लू का कहर

मुंबई। इसमें कोई शक नहीं की बढ़ते तापमान के साथ लू का कहर भी बढ़ता ही जा रहा है, जो आज करीब-करीब पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले चुका है। इसका सबसे ज्यादा खामियाजा दक्षिणी गोलार्ध के कमजोर देशों को उठाना पड़ रहा है। हालांकि देखा जाए तो यह देश बढ़ती गर्मी और लू के कहर की मूल जड़ यानी बढ़ते उत्पर्जन के बहुत छोटे से हिस्से के लिए जिम्मेवार हैं।

इस बारे में डार्टमाउथ यूनिवर्सिटी द्वारा किए नए अध्ययन से पता चला है कि 1990 के बाद से लू की वजह से इंसानी स्वास्थ्य, उत्पादकता और कृषि आदि क्षेत्रों पर पड़ते प्रभाव के चलते करीब 1,324 लाख करोड़ रुपए (यानी 16 लाख करोड़ डॉलर) का

नुकसान हो चुका है। इतना ही नहीं इसका सबसे ज्यादा बोझ पहले से ही कमजोर अर्थव्यवस्थाओं पर पड़ रहा है। जर्नल साइंस एडवांसेज में प्रकाशित इस अध्ययन के जो नतीजे सामने आए हैं उनके अनुसार लू के चलते होने वाला आर्थिक नुकसान अब दूर भविष्य की समस्या नहीं है। इसका असर पहले ही दिखने लगा है। अनुमान है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को 1992 से 2013 के बीच 5 से 29.3 ट्रिलियन डॉलर

के बीच नुकसान हुआ था। शोधकर्ताओं का अनुमान है कि जहां बढ़ती गर्मी और लू के चलते दुनिया की सबसे समृद्ध अर्थव्यवस्थाओं को हर वर्ष प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का औसतन 1.5 फीसदी नुकसान है। वहीं दुनिया के

सबसे कमजोर देशों को होने वाला यह नुकसान प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद का 6.7 फीसदी है। इस बारे में अध्ययन से जुड़े शोधकर्ता प्रोफेसर जस्टिन मैनकिन का कहना है कि वैश्विक स्तर पर सबसे कम आय वाले देश गर्मी की इन बढ़ती घटनाओं से सबसे ज्यादा पीड़ित हैं। इतना ही नहीं जैसे-जैसे जलवायु में आते बदलावों के चलते गर्मी का प्रकोप बढ़ा इसका खामियाजा इन देशों को कहीं ज्यादा उठाना पड़ेगा।

अध्ययन में यह भी सामने आया है कि एक निश्चित बिंदु तक यूरोप और उत्तरी अमेरिका के समृद्ध क्षेत्र, जो दुनिया के सबसे बड़े कार्बन उत्पर्जन भी हैं, उनको सैद्धांतिक रूप से गर्म दिनों की वजह से आर्थिक रूप से फायदा हो सकता है। वहीं इसके विपरीत भारत और

चीन जैसे अन्य प्रमुख उत्पर्जक देशों में बढ़ते तापमान और लू के चलते कहीं ज्यादा तेजी से नुकसान होगा। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन द्वारा जारी आंकड़ों की मानें तो वैश्विक स्तर पर गर्मी के बढ़ते तनाव के कारण जहां 1995 में 28,000 करोड़ डॉलर का आर्थिक नुकसान हुआ था। उसके बारे में आशंका है कि वो 2030 में बढ़कर 2,40,000 करोड़ डॉलर पर पहुंच जाएगा। देखा जाए तो बढ़ती गर्मी दुनिया की

लेकर यूनिसेफ द्वारा जारी एक नई रिपोर्ट द कोल्डेस्ट ईयर ऑफ द रेस्ट ऑफ देयर लिव्स के हवाले से पता चला है कि धरती पर हर चार में से एक बच्चा पहले ही लू की चपेट में है, जबकि 2050 तक हर करोड़ डॉलर का आर्थिक नुकसान हुआ था। उसके बारे में यदि भारत से जुड़े आंकड़ों को देखें तो जर्नल वेदर एंड क्लाइमेट एक्सट्रीम्स में प्रकाशित एक रिसर्च से पता चला है कि 1970 से 2019 के बीच पिछले 50 वर्षों में देश में लू की करीब 706 घटनाएं दर्ज की गई हैं, जिनमें 17,362 लोगों की जान गई है। इतना ही नहीं इस दौरान देश में आबादी का 46 फीसदी और कुल चरम मौसमी घटनाओं के कारण आबादी का करीब 23 फीसदी हुई कुल मौतों में से 12 फीसदी के हिस्सा है। गौरतलब है कि लू को लिए लू ही जिम्मेवार थी।